4.जातकर्म

जातकर्म सँस्कार- जातकर्म सँस्कार एक ऐसा सँस्कार है जो जन्मपूर्व और जन्मोत्तर सँस्कारों को जोड़ रहा है । यह चौथा सँस्कार है और इसका समय शास्त्रीय तौर पर १०वाँ मास है । नौ मास के पश्चात्नौ दिन हो जाने पर १० चन्द्रमास बन जाता है क्योंकि सामान्यतया २८० दिन मान्य है जो एक चन्द्र मास के २८ दिन मान्य होने से इसमें १० चन्द्रमास पूरे हो जाते हैं । ३० दिन के मास गणना करने पर नौ मास १० दिन बनते हैं । जो बच्चा इतना समय पूरा लेकर जन्म लेता है वह उचित रुपेण स्वस्थ व विकसित समझा जाता है, पर जो पूर्व ही जन्म ले लेते हैं, वे थोड़ा कमजोर या किसी तरह का अपरिपक्व माने जाते हैं । ऐसी अवस्था को ठीक करने के लिये आज कल मेडिकल सुविधायें पूर्णतया उपलब्ध हैं । ऐसे बच्चों को किसी खाश सुरक्षा में रखकर उसके समुचित विकास हेतु उपरोक्त काल पूरा किया जाता है । जब डॉक्टर आस्वस्थ हो जाते हैं तब वे बच्चे को खाश अवस्था से अलग कर सामान्य अवस्था में रखते हैं फिर माँ समेत बच्चे को घर भेजा जाता है । आगे हम इसकी एक-एक विधि से विशेष जानकारी लें-

१. जल-सिंचन- अर्थात् जलवायु के अनुसार प्रसविता नारी पर जल का सिंचन करना- मंत्र पाठ के साथ मंत्र-पद "एजतु" के भावानुसार पति गर्भ के लिये जरायु सहित नीचे आने की प्रार्थना करता है, साथ ही प्रसविता नारी के शरीर और मुख भाग पर जल के सिंचन से हल्का स्नान करवाता है । सर्दी में स्नानयोग्य गर्म जल और ग्रीष्म ऋतु में शितोष्ण जल का प्रयोग उचित है । प्रसव-काल में प्रसविता को हल्का ठंड लगकर कंपन जैसा महसुस होने लगता है । ऐसी अवस्था को स्थिर करने हेतु ही अनुकूल तापमान का जल लेना उचित है । तात्कालिक पीड़ा थोड़ा कम करने में भी यह कार्य सहायक प्रतीत होता है । पति द्वारा यह कार्य होने पर पत्नी मनोवैज्ञानिक तौर पर थोड़ा आसान महसुस करती हुयी दर्द को सह लेती है ।

२. नाल काटना- बच्चे की नाभि के साथ जुड़ी नाड़ी को काटा जाता है । यह एक लम्बी नाड़ी होती है जो माँ की जरायु-नाड़ी से जुड़ी होती है । सुश्रूत (शारीर १०/१२) में लिखा है-" नाभिनाड़ीम्ष्टाँगलीमायम्य सूत्रेण बद्ध्वा छेदयेत्"- नाभि से जुड़ी नाड़ी को नाभि से आठ अँगुल नापकर धागे से बान्धकर काटें । कहीं पर एक बीत्ता भी कहा है क्योंकि एक बीत्ता में आठ अँगुल ही होते हैं । चरक ८/७३ के अनुसार एक बालिश्त है । इसमें भी आठ अँगुल ही होते हैं । नाभि से जुड़ी यह बीत्ता भर नाड़ी धीरे-धीरे सुखकर स्वयं झड़ जाती है और बच्चे की नाभि अपनी स्वाभाविक स्वस्थ अवस्था में आ जाती है ।

३. जीह्वा पर "ओ३म्" लिखना-विद्वान्गृहस्थ पुरोहित जो सँस्कारों को सम्पन्न करवाने में

निपुण हो; के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ यह सँस्कार सम्पन्न करवाया जाता है । बच्चे के पिता द्वारा बच्चे की जीह्वा पर सोने की शलाका से मधु व घी मिश्रित घोल के साथ विधिवत्"ओ३म्" शब्द लिखने की प्रक्रिया है । मधु अधिक और घृत थोड़ा के अनुपात से मिश्रित घोल तैयार किया जाता है । वस्तुत: घी और शहद का विषम मात्रा में मिश्रण एक औषधि है जो बच्चे को जीह्वा या मुख विकार से बचाती है । ध्यान देने योग्य यह बात है कि शहद और घृत का मिश्रण में शहद अधिक और घृत बहुत कम हो तो यह एक अच्छी औषधि है पर दोनों की वराबर मात्रा हो जाने पर यह विषैला बन जाता है । अत: निश्चित ही इसका ज्ञान हर माता-पिता और पुरोहित को होना चाहिये । आजकल शहद और घी भी शुद्ध नहीं मिलता, हमें इसका भी ध्यान रखना है । अशुद्ध शहद और अशुद्ध घी का मिश्रण नुकसान पहुँचा सकता है । सोने का शलाका भी एक औषधि रुप ही सिद्ध है । स्वर्ण, शहद और घी तीनों मिलकर बच्चे के जिह्वा, मुख व कंठ के विकारों को दूर करते हैं, साथ ही इससे जीह्वा पर मधुरता का सँस्कार पड़ने से बच्चे को मधुरता का ज्ञान होता है । ओ३म-लेखन द्वारा प्रारम्भ में ही बच्चे पर आस्तिकता का प्रबल सँस्कार डलने का प्रयास है क्योंकि ओ३म्परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम मान्य है । उपयुक्त पदार्थों के कुछ और भी गुण जानिये । घृत से मिरगी-शूल, ज्वर-नाशन, वायु-पित-शमन होता है । शहद से मधुरता, जठराग्नि-वर्द्धन, बल-वर्द्धन, शरीर का स्वस्थ और सुडौल होना आदि सम्भावित है । स्वर्ण से वीर्य, मेधा, आयु, स्मृति आदि का वर्द्धन होता है । स्वर्ण भी शुद्ध हो । अँगुलि से मिश्रण कभी न चटायें क्योंकि सावधानी वर्त्तने पर भी अँगुलि में दोष सम्भावित है । ओ३म्अक्षर लिखकर पिता द्वारा कान में " वेदोऽसि" कहा जाता है । इसका अर्थ है कि तुम्हरा गुप्त नाम वेद है । वेद के चार विशेष अर्थ मान्य हैं-ज्ञान, विचार, सत्ता व लाभ । इन चारों अर्थों के अनुसार भावों का सँस्कार डालना अभिप्राय है । ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म व ईश्वर के प्रति श्रद्धा का सँस्कार शुरु से ही बच्चे में बना रहे जिससे जीवन में सुख पाये; यही उद्देश्य है ।

४.प्रसव-पीड़ा- प्राय: यह देखा जाता है कि जो गर्भिणी घर के काम-काज में प्रसन्नता के साथ लगी रहती है; वह बड़ी सरलता से प्रसव करती है । गर्भस्थ बच्चे को नीचे सरकने में कष्ट तो होगा ही पर श्रम-साधिका नारियाँ अपने प्रसव-काल में सहजता से थोड़ा कष्ट का ही अनुभव करती हुयी बाजी मार जाती है । जंगल आदि में काम करने वाली स्त्रियाँ तो कई वार चलते-फिरते हँसते-हँसते प्रसव कर देती हैं लेकिन यह देखा जाता है कि शहर की प्रसूता नारी काफी कठिनाई या दर्द का सामना करती है । कारण कि शहर में आराम की जिन्दगी होती है फलत: उचित व्यायाम का अभाव हो जाता है । कई वार उन्हें बड़ा ऑपरेशन करना पड़ता है । इसलिये यह आवश्यक है कि गर्भिणी स्त्री उचित मात्रा में व्यायाम, चलना-फिरना, झाड़ू-पोचा, थोड़ा-बहुत रसोई का काम-काज आदि अवश्य करती रहे पर प्रसन्नतापूर्वक न कि किसी दबाव में । ऐसा करना उसे सुखद प्रसव (नार्मल डिलिवरी) में निश्चित ही अनुकूलता प्राप्त होगी ।

५.सिर-सूँघना- सिर सूँघना प्यार और आशीर्वाद जताने के लिये सर्वथा उचित है । पिता बच्चे का सिर सूँघता है और भरपूर प्यार व आशीष देता है कि हमारा प्यारा बच्चा युग-युग जीये; सर्वथा स्वस्थ रहे । यह वैदिक प्रथा रामायण और महाभारत काल में भी सुप्रसिद्ध थी । जब बच्चे बड़ों के सामने झूकते और चरण छूते तो बड़े उन्हें माथा सूँघकर या सिर पर हाथ फेर कर प्यार व आशीर्वाद जताते थे । आजकल गाल या ओष्ठ आदि को चूमने या हाथ से छूने का प्रचलन चल पड़ा है जो अवैदिक है । चूमने या हाथ लगाने में थूक के विषैले परमाणु या हाथ के मल आदि के गन्दे दोषपूण परमाणु से अगले व्यक्ति को रोगग्रस्त कर सकते हैं । अत: यह अवैज्ञानिक और अनुचित है । माथा सूँघना या गले मिलना फिर भी उचित है । गले मिलने में भी बीच में कपड़े आते हैं जिससे संक्रामक रोग से सुरक्षा बनी रहती है ।

६.स्तन-पान- प्रसुता माँ बच्चों का भोजन अपने स्तनों में लेकर आती है । स्तनों को स्वच्छ रखने तथा बच्चे को स्तन-पान कराने से माँ की ममता और बच्चे का शुद्ध भोजन दोनों तृप्त होते हैं । प्रभु की कृपा देखें-जन्म लेते ही भोजन हेतु बच्चे को कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ता । माता का दूध ही बच्चे के शरीर की पूर्ण पुष्टि हेतु सर्वोत्तम है । आयुर्वेद में ठीक ही कहा है-" मातुरेव पिवेत्स्तन्यं तत्परं देहवृधये ।" जननी का दूध ही बच्चे के लिये सबसे पुष्टिकारक भोजन है । निवेदन है कि बच्चे को प्रारम्भ में स्तन-पान अवश्य करायें । कुछ स्त्रियाँ अपनी सुन्दरता नष्ट होने के डर से स्तन-पान नहीं करातीं पर यह नासमझी है । यह तो बच्चे का नैसर्गिक हक है । अब तो आधुनिक डॉक्टर भी कहने लगे हैं कि प्रसुता बच्चे को दूध अवश्य पिलाये क्योंकि यह देखा गया है कि जो बच्चा शुरू से माँ का दूध अधिक देर तक पीता है उसे पूरा पोषण मिलता है; वह प्राय: पोलियो आदि बिमारियों से बचा रहता है ।

७.जल-पूर्ण कलश रखना-प्रसुता स्त्री जिस कमरे में रहती है, वहाँ उसके सिर-भाग में एक जलपूर्ण कलश रख दिया जाता है । इससे प्रदूषित वायु को जल में शोशित हो जाने से घर को शुद्ध रखने में मदद मिलती है । घर के लोग सदैव ध्यान रखते है कि कलश में पर्याप्त जल बना रहे ताकि विकृत वायु को शोशित करने में वह कम न पड़े । सिर भाग में कलश रखने से प्रसूता का मस्तिष्क शीतल व शान्त रहता है । सिर ही तो सब ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, मस्तिष्क आदि का आधार है; जलपूर्ण कलश से सारी इन्द्रियाँ, मन व मस्तिष्क सब को शीतल व शान्त रखने का अतीव वैज्ञानिक सहज व सरल उपाय है ।

८.सरसों की आहुति-जिस घर में प्रसूता माँ व बच्चे को रखा जाता है उस घर में बच्चे के जन्म के बाद न्युनतम दस दिनों तक पीली सरसों की आहुतिपूर्वक प्रात: सायं हवन करने का निर्देश है । आयुर्वेद में सरसों को खाज नाशक व सिरोविरोचन (सिर के बलगम को निकालने वाला) बताया गया है । सरसों के तेल को कड़वा, गर्म, रक्तपित्तनाशक, कफनाशक,

वायु विकार को हरने वाला, खुजली, कुष्ट आदि त्वचा के रोगों से वचाने वाला कहा गया है । इस कारण भात और सरसों को मिलाकर आहुतियाँ देने का भी विधान है । भात वीर्यवर्द्धक पौष्टिक आहार है । पीली सरसों स्वयं में एक विशेष औषधि है । आहुति से इनकी सुगन्धि प्रसूता स्त्री के घ्राण/नासिका-द्वार द्वारा भीतर जाती है जो सभी प्रकार से प्रसूता नारी को स्वस्थ रखती है । अन्दर-बाहर सब प्रकार की नुकसानदेय मलादि उत्पन्न दुर्गन्धि व क्रीमियों को नष्ट कर वातावरण को स्वच्छ रखने में मदद करती है । आज भी कई क्षेत्रों में सरसों व अरण्डी के तेल से कम से कम दस दिनों तक प्रसूता माँ व बच्चे के घर में दीपक जलाकर रखा जाता है । आयुर्वेद के अनुसार अरण्डी की आहुति व दीपक जलाना भी उचित ही है ।

इस प्रकार जातकर्म सँस्कार के माध्यम से मंत्रों द्वारा प्रार्थना एवं विधिगत क्रियाओं से हम सदैव एक होनहार, दीर्घायु, स्वस्थ, मेधावी व सँस्कारित गुणी संतान की कामना के साथ सम्पूर्ण घर को भी शुद्ध रखने का प्रयास करते हैं ।

Jaatakarma kaa Mantra-vidhi bhaaga